SHAKUNTALAM INSTITUTE OF TEACHERS EDUCATION

KIRHINDIH, KUMHAU STATION ROAD, SHIVSAGAR

COURSE NAME – B.Ed. **SESSION** – 2020-22

SUBJECT - Learning and Teaching (C-3)

TOPIC NAME – Bandura's theory of Social Learning

DATE - 28/06/2021

बैण्डुरा का सामाजिक अधिगम सिद्धान्त
(Bandura's theory of Social Learning)

सामाजिक अधिगम सिद्धान्त का प्रतिपादन अल्बर्ट बंडूरा (Albert Bandura) ने किया था। इस सिद्धान्त के अनुसार व्यक्ति अवलोकन, नकल और आदर्श व्यवहार के प्रतिमान के माध्यम से एक दूसरे से सीखते हैं। समाज द्वारा स्वीकार किये जाने वाले व्यवहार को अपनाना तथा वर्जित व्यवहार को ना करना ही सामाजिक अधिगम है।

सामाजिक अधिगम सिद्धान्त को व्यवहारवाद और संज्ञानात्मक अधिगम सिद्धान्तों के बीच की योजक कड़ी कहा जाता है, क्योंकि यह सिद्धान्त ध्यान, स्मृति और प्रेरणा तीनों को संयोजित करता है। इसलिए अल्बर्ट बंडूरा को प्रथम मानव व्यवहार-संज्ञानवादी कहते हैं।

बन्डूरा का प्रयोग :-

बंडूरा ने एक बालक पर बेबीडॉल का प्रयोग किया। इसके लिए बन्डूरा ने एक बालक को तीन तरह की फिल्में दिखाई।

प्रथम इस फिल्म में बालक को सामाजिक मूल्य आधारित पहलु दिखाए गए, जिसे देखकर बालक बेबीडॉल के साथ सामाजिक व्यवहार दर्शाता है।

द्वितीय यह फिल्म प्रेम पर आधारित थी जिसे देखकर बालक बेबी डॉल से स्नेह करता है, उसे सहलाता है।

तीसरी यह फिल्म हिंसात्मक दृश्य-युक्त थी। जिसे देख कर बालक गुड़िया की गर्दन को तोड़ देता है।

इस प्रयोग के आधार पर बंडूरा ने यह निष्कर्ष निकाला कि छोटे बच्चों को यह नहीं पता होता कि उनको क्या सीखना चाहिए और क्या नहीं सीखना चाहिए। इस लिए बच्चों के समक्ष सदैव आदर्श व्यवहार के प्रतिमान को प्रस्तुत करना चाहिए।

सामाजिक अधिगम के उपाय

बंडूरा ने सामाजिक अधिगम के निम्नलिखित चार उपाय बताए हैं —

⇒ ध्यान :- अधिगम विषयवस्तु (जिसको सीखना है) को आकर्षक तथा प्रभावशाली तरीके से प्रस्तुत करना ध्यान / अवधान कहलाता है।

⇒ अवधारणा या धारण करना :— इसके अन्तर्गत यह देखा जाता है कि अधिगम के लिए प्रस्तुत किये गये विषय-वस्तु को कितना सीखा गया है।

⇒ पुनः प्रस्तुतीकरण :— यदि उक्त अधिगम वस्तु का प्रभावशाली हो तो ऐसी स्थिती में अधिगम की विषय-वस्तु को कम सीखते हैं तो उसको पुनः दोहराना चाहिए तथा सिखने के लिए मॉडल, चित्र, चार्ट आदि सामग्री का उपयोग करना चाहिए।

⇒ पुनर्बलन :- विषय-वस्तु को पुनः प्रस्तुतीकरण के पश्चात् यदि बालक अधिगम की प्रतिपुष्टि

कर दे तो यह प्रतिपुष्टि ही पुनर्बलन है। यदि छात्र उसे सही तरह सीख लेता है, तो उसकी प्रशंसा द्वारा उसे प्रेरित करना चाहिए।

सामाजिक अधिगम के कारक :—

बंडूरा ने सामाजिक अधिगम के निम्नलिखित कारक बताएं हैं —

⇒ अभिप्रेरणा (Motivation)

⇒ स्वविवेक (Self-Discretion)

⇒ स्वअनुक्रिया (Self-Response)

⇒ स्वनियंत्रण (Self-Control)

⇒ स्वनिर्णय (Self-Decision)

सामाजिक अधिगम को प्रभावित करने वाले अन्य कारक :—

सामाजिक अधिगम को प्रभावित करने वाले करकों को निम्नलिखित वर्गों में विभाजित किया जा सकता है —

⇒ अधिगमकर्ता से संबंधित कारक :-

अधिगमकर्ता का शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य कैसा है, उसकी क्षमता कितनी है, वह क्या हासिल करना चाहता है, उसके जीवन का उद्देश्य क्या है, इन बातों पर उसके सीखने की गति, इच्छा एवं रुचि निर्भर करती है।

अधिगमकर्ता से सम्बन्धित कुछ महत्वपूर्ण कारक निम्नलिखित हैं—

छात्र सम्बन्धी कारक :—

⇒ शारीरिक स्वास्थ्य – स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क होता है.
⇒ मानसिक योग्यताएँ, बौद्धिक स्तर बुद्धि - लब्धि 90 से ज्यादा)
⇒ सामाजिक विकास तथा समायोजन।
⇒ अध्ययन के प्रति रुचि तथा लगन।
⇒ अध्ययन के प्रति साकारात्मक अभिरुचि।
⇒ संवेगात्मक सन्तुलन।
⇒ छात्र का आकांक्षा स्तर।

शिक्षक से सम्बन्धित कारक :-

अधिगम की प्रक्रिया को प्रभावित करने में शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। अध्यापक का विषय पर कितना अधिकार है, वह शिक्षण कला में कितना योग्य है, उसका व्यक्तित्व व व्यवहार कैसा है, इन सबका प्रभाव बालक के अधिगम, इसकी मात्रा एवं इसकी गति पर पड़ता है। अध्यापक के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य का भी बालक के अधिगम से सीधा सम्बन्ध होता है। एक स्वस्थ शिक्षक ही सही ढंग से बच्चों को पढ़ा सकता है।

शिक्षक सम्बन्धी कारक

⇒ शिक्षक की शारीरिक रचना।
⇒ शिक्षक की मानसिक योग्यता तथा बौद्धिक क्षमताएँ।
⇒ शिक्षक की शैक्षिक उपलब्धियाँ।
⇒ अध्यापक प्रशिक्षण की योग्यता।
⇒ शिक्षण विधियों एवं प्रविधियों का ज्ञान एवं कौशल।
⇒ अभिप्रेरणा तथा पुनर्बलन का बोध व प्रविधियों का ज्ञान व कौशल।
⇒ कक्षा प्रबन्धन की क्षमता।

पाठ्यवस्तु से सम्बन्धित कारक :—

अधिगम की प्रक्रिया में अध्यापक एवं छात्रों द्वारा पाठ्यवस्तु को प्रयोग में लाया जाता है। यदि विषय उनके अनुकूल न हो तो इसका अधिगम पर भी प्रभाव पड़ता है। विषय-वस्तु बालक की रूचि के अनुकूल है या नहीं, उसकी प्रस्तुति किस प्रकार की है, इन सब बातों का प्रभाव बालक के अधिगम पर पड़ता है। यदि विषय-वस्तु बालक की रूचि के अनुरूप नहीं है, तो वह इसे सीखना नहीं चाहता। ये कारक निम्नलिखित हैं—

⇒ पाठ्यवस्तु की प्रकृति (कहना, करना, प्रदर्शन करना)

⇒ पाठ्यवस्तु का विश्लेषण तथा संश्लेषण (तत्वों में विभाजन) प्रत्यय सिद्धान्त; तथ्य, अधिनियम, भाषा, सामान्यीकरण विभेदीकरण आदि।

⇒ अनुदेशन प्रक्रिया का विकास।

⇒ पाठ्यवस्तु से उद्देश्यों का प्रतिपादन करना।

⇒ पाठ्यवस्तु के प्रस्तुतीकरण हेतु विधियों एवं प्रविधियों का चयन करना

⇒ पाठ्यवस्तु के आधार पर अधिगम परिस्थितियों का निर्धारण करना।

⇒ पाठ्यवस्तु के आधार पर शिक्षण सूत्रों का उपयोग करना

प्रक्रिया से सम्बन्धित कारक :-

अधिगम प्रक्रिया, विषयवस्तु प्रस्तुत करने का तरीका एवं शिक्षण शैली आदि भी अधिगम को प्रभावित करती है। यदि विषय वस्तु को गलत तरीके से प्रस्तुत किया गया तो बालक को इसे समझने में मुश्किल होती है। इसी के साथ शिक्षक किन विधियों युक्तियों एवं सिद्धान्तों का प्रयोग शिक्षण प्रक्रिया में कर रहा है। यह भी बालक की अधिगम दर को प्रभावित करता है। इसलिए शिक्षकों को बालकों के मानसिक स्तर के अनुसार शिक्षण विधियों का प्रयोग करना चाहिए ताकि बालक अधिगम प्रक्रिया में सक्रिय होकर भाग ले सके। बालक अभ्यास क्रिया द्वारा विषय वस्तु पर पकड़ हासिल करता है, परन्तु इसके लिये यह भी महत्वपूर्ण है कि विद्यालय अथवा अधिगमकर्ता के आस-पास का वातावरण कैसा है क्योंकि शिक्षण अधिगम सम्बन्धी उपयुक्त परिस्थितियाँ एवं वातावरण बालक को ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रेरित करता है तथा बालक स्वयं को ऐसे वातावरण में सहज पाता है जिससे उसके अधिगम की गति बढ़ जाती है।

शैक्षिक महत्व :-

बंडूरा के सामाजिक अधिगम सिद्धान्त के शैक्षिक महत्व को निम्न तथ्यों के द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है—

⇒ यदि बच्चों के समक्ष अच्छे गुणों वाले व्यवहार को प्रदर्शित किया जाता है, तो उक्त बालक में वांछित गुणों का विकास किया जा सकता है।

⇒ सामाजिक अधिगम का आधार अनुकरण है।

⇒ बच्चों के व्यक्तित्व विकास में सबसे महत्वपूर्ण सिद्धान्त सामाजिक अधिगम वाद है।

⇒ बालकों के समक्ष बुरे व्यवहार, अनैतिक मॉडल से बचाना चाहिए।

⇒ बच्चों के समक्ष आदर्श मॉडल प्रस्तुत करना चाहिए।